



**प्यारे- किसान भाई-बहनों,
प्यारे बच्चों, युवाओं व
स्वराज साथियों
जय गुरु !!**

पिछले तीन वर्षों से “वाते वाग्धारा नी” पत्रिका के माध्यम से आपसे नियमित संवाद करने का अवसर मिलता रहा है जैसा कि मैं हर बार अलग-अलग विषयों पर ध्यान रखने योग्य बाते, उस माह के कार्य, सफलता के प्रयास, संगठनों के द्वारा किये गये प्रयासों पर कहता आया हूँ। इन 3 वर्षों में जब भी समुदाय से चर्चा करने का अवसर मिला एवं वाते पत्रिका को बहुत अच्छे से देखने का अवसर मिला। इस दौरान कई जगह पर शुरुआत में ऐसा भी था की जहां पर पढ़ने वाले नहीं होंगे, वहां पर कैसे पहुंचेंगे, तो उस स्थिति में हम जब देखते है की जहां पढ़ने वाले नहीं होंगे तो हमको यह लग रहा था कि जो युवा पढ़े हुए हैं वहीं इस पत्रिका को पढ़ेंगे और समुदाय में चर्चा करेंगे। हमारा प्रारम्भिक उद्देश्य यह था कि हम हमारी चौपालों में वाते पत्रिका को माध्यम बनायें। कोरोना के समय में विशेष रूप से सभी साथियों के बीच परिवर्तन, संवाद का माध्यम एवं चर्चा के विषय में थी, परंतु वाग्धारा का कहना है कि हम हमारी चर्चा या संवाद को एक तरफा कभी नहीं रखना चाहेंगे। यह समावेशी हो और सबके साथ हो। मैं आज इस संपादकीय लेख के माध्यम से पढ़ने वाले हर पाठक से आग्रह करना चाहूंगा की हर स्वराज मित्र, वाग्धारा टीम के सदस्य, गांव में जो संगठन के पदाधिकारी है वे कुछ लिखकर भेजे। इस पत्रिका में जो कार्यक्रम तैयार होते हैं इन कार्यक्रमों से जुड़कर आपके विचार भेजें ताकि विचार व्यापक हो। हमारे 100000 परिवारों तक जो संवाद पहुंचता है उसका माध्यम बन पाए।

मैं वाग्धारा टीम के साथियों से आग्रह करना चाहता हूँ कि वो इस पत्रिका को केवल मात्र बांटने या सरपंच तक पहुंचाने का महत्व नहीं समझे, इसको आप स्वयं कितना पढ़ते हैं और पढ़ करके इस पत्रिका को कितना आगे ले जाते हैं। वह हमारे लिए महत्वपूर्ण है। हर व्यक्ति जैसा कि हमने देखा हमारी पदयात्रा के दौरान सक्रिय भागीदारी निभा रहा था वैसे ही इस पत्रिका को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए जो व्यक्ति हमसे जुड़े हुए नहीं है वो आपसे कितना मांगते और जुड़ते हैं और इसके ज्ञान को काम में लेते हैं, वह हमारे लिए महत्वपूर्ण है। मैं आज इस अंक के माध्यम से आग्रह करना चाहता हूँ कि आप लोग अगले अंक के लिए अपनी प्रविष्टियां और विचार भेजें ताकि पत्रिका तैयार करने वाले अच्छे से संकलन कर पाए।

इसी प्रकार अगला माह भयंकर गर्मी का होगा। हमारे क्षेत्र में भारी लू के कारण उल्टी- दस्त व बच्चे बीमार होने का प्रकोप बढ़ जाता है। हमारे यहां पर देशी इलाज के तौर पर सबसे महत्वपूर्ण केरी की छाछ होती है। आप कच्चे आमों की छाछ अपने बच्चों व परिवार को ज्यादा से ज्यादा पिलाएं साथ ही पानी पीकर के रहे, सिर को कपड़े से ढक कर रखें। यह संदेश ज्यादा से ज्यादा दुसरों तक पहुंचाए। अपने जो फलदार पेड़-पौधे है उनके तनों की सुरक्षा का ध्यान रखें, छोटे पेड़ है उनको बांध कर रखें। गर्मी में कई पौधे जल न जाये इसलिए हमें पानी का ध्यान रखना होगा शायद हमारा एक मटका पानी उन पौधों को बचाने में मदद कर दे। यही हमारे लिए सबसे बड़े बच्चे है इनकी पीढ़िया भी हमारे काम आएंगी। इसलिए हमारे लिए महत्वपूर्ण है गर्मी में सब्जी का प्रबंध, पेड़ों का रख-रखाव, पशुओं का ध्यान रखना क्योंकि पशु मुंह से नहीं बोल सकते उन्हें समय पर पानी पिलाना और देशी दवाइयों के साथ नीम के नीचे बांधना। मैं आपके विचार सुनने के लिए तत्पर हूँ। हमारी जिम्मेदारी हमारे परिवार, फले, गांव, पंचायत को बाल श्रम मुक्त व बाल मित्र बनाने कि है जिसमें बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य व सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

मैं प्रत्येक पाठक, स्वराज मित्र, संगठन के साथियों से आग्रह कर रहा हूँ कि आप वाग्धारा की चर्चा, और इसके प्रयासों के प्रमुख पुरोधा व कर्ताधर्ता है, अगर आप ही इन ज्वलंत विषयों को नहीं समझेंगे, चिंता नहीं करेंगे तो, हमारी बातें, बातें ही रह जाएंगी और यह परिवर्तन साकार नहीं हो पाएगा, और अगर परिवर्तन साकार नहीं हुआ तो हमारे प्रयास समय के साथ धुंधले होते जाएंगे तो हमें कुछ समय बाद अपने आप पर पछतावा होगा। अतः मैं आग्रह करना चाहता हूँ कि हमारे स्वराज की परिकल्पना वाला गांव, समाज, संस्कृति बची हुई रहे उसके लिए हम स्वयं चिंतनशील रहे, प्रयास करते रहे, आप सबके प्रयासों की अपेक्षा में।

धन्यवाद
जय- हिंद, जय- स्वराज !!!

आपका अपना
जयेश जोशी

मृदा एवं जल स्वराज : मृदा एवं जल संरक्षण की आवश्यकता

ग्रीष्म ऋतू के वैशाख-ज्येष्ठ माह में सूरज की तपन बढ़ती जाती है। तापमान बढ़ने के साथ ही शुष्क और तेज हवाएँ चलती है जो इस माह की विशेषता है। हमारे पूर्वज आखातीज से ही आगामी खरीफ फसल की तैयारियां प्रारंभ कर देते थे। हमें भी अपने पूर्वजों के दिखाए राह पर चलते हुए अपने खेत में, अपने गाँव में मिट्टी और पानी के संरक्षण के लिए कार्य करना चाहिए। हमें हमारी प्राथमिकताएँ निर्धारित करते हुए, आने वाली पीढ़ी के बेहतर भविष्य के लिए आज से और अभी से ही प्रकृति के दिए गए अमूल्य उपहारों जल, जंगल, जमीन, जानवर और बीज का संरक्षण करना होगा।

मिट्टी संरक्षण:

धरती के 85 प्रतिशत जीव जैसे मनुष्य, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, कीड़े-मकोड़े और आँखों से भी नहीं दिखाई देने वाले अनेकों सूक्ष्मजीव पृथ्वी की ऊपरी पतली परत पर निर्भर हैं जिसे हम मिट्टी कहते हैं। पिछले 40 वर्षों में 40 प्रतिशत से अधिक मिट्टी नष्ट हो गई है। अगर इसी प्रकार से मिट्टी नष्ट होती गई तो हम आने वाले 50 वर्षों के बाद खेती नहीं कर सकेंगे। हमारे भारत देश में भी 30 प्रतिशत मिट्टी नष्ट हो गई है और बहुत ही तेजी से खेत बंजर होते जा रहे हैं। इसका प्रमाण है कि कई किसान भाई खेती में लगातार गिरे फसल उत्पादन और उपज के स्वाद में कमी महसूस कर रहे हैं। यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य के लिए बलिष्ठ पृथ्वी के जीवों के लिये भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- **मेडबंदी** : खेतों में विशेषकर ढलान वाले खेतों में, ढाल के विपरीत मिट्टी या पत्थर का उपयोग करते हुए मेडबंदी करनी चाहिए।
- **पानी के तेज बहाव को कम करना या रोकना** : ऐसे स्थान जहाँ तेज गति से पानी बहता है वहाँ पाल बंधान, पत्थर बंधान, झाड़ीनुमा पौधों का सघन रोपण इत्यादि उपाय अपनाकर पानी के बहाव को कम किया जा सकता है साथ ही मिट्टी को बहने से रोका जा सकता है।
- **वृक्षारोपण** : खेत कि मेड पर फलदार पेड़- पौधे, चारा आदि लगा सकते हैं। इन वृक्षों की जड़े मिट्टी को बांधे रखती हैं जिससे मिट्टी के कटाव में कमी आती है।
- **सिद्धिदार खेती** : ऐसे स्थान जो अधिक ढाल वाले होते हैं वहाँ सीधे हल से जोतकर खेती करने से मिट्टी पानी के साथ बहकर चली जाती है ऐसी स्थिति में ऐसे स्थानों पर सिद्धीनुमा खेत



बनाने चाहिए और उनमें खेती की जानी चाहिए इससे मिट्टी के कटाव को रोका जा सकता है।

- **सामुदायिक उपाय** : कुछ सामुदायिक उपायों जैसे वनों की कटाई, खुले में पशुओं के चरने पर पाबंदी और वनों में स्थानीय पौधों का रोपण करके भी मिट्टी के कटाव को रोका जा सकता है।
- **जैविक खेती** : मिट्टी में जैविक/कार्बोनिक् तत्वों की मात्रा बढ़ाकर, नमी को बनाये रखते हुए भी मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार किया जा सकता है साथ ही हरी खाद, जैविक खाद व कीटनाशकों का प्रयोग करके, बदल-बदलकर फसलों को लगाने से भी मिट्टी का स्वास्थ्य बना रहता है जैविक खेती से वायु संचार में वृद्धि होती है, कार्बन तत्वों की पूर्ति भी बढ़ती है जिससे फसलों के उत्पादन में भी वृद्धि होती है।

जल संरक्षण:

हमारे वागड़ क्षेत्र में अधिकांश परिवार खेती करके अपना जीवनयापन करते हैं। हम सभी जानते हैं कि बिना जल के खेती करना संभव नहीं है उसी प्रकार सभी जीव-जंतुओं के लिए जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। हमने सिंचाई के लिए धरती के ऊपर नदी, नालो और तालाबों के जल का पूरा पानी उपयोग कर लिया है। तो वही दूसरी ओर धरती के गर्भ में स्थित जल को भी बोरवेल के माध्यम से निकाल लिया है। जिसके कारण जहाँ एक ओर नदी तालाब आदि सुख गए हैं तो वहीं भूगर्भीय जल में भी गंभीर गिरावट आ रही है। कई विद्वानों ने भविष्यवाणी की है कि अगला विश्वयुद्ध जलस्रोतों पर कब्जा जमाने के लिए ही होगा। हमारे पूर्वजों ने जल के महत्व को देखते हुए कहा है कि

“धी दुल्यौं म्हरा की नीं ज़ासी।
पानी दुल्यौं म्हारो जी बले।”

हमें अपने परम्परागत तरीकों को अपनाते हुए खेत के पानी को खेत में, गाँव के पानी को गाँव में ही रोकना होगा। पहाड़ की चोटी से लेकर घाटी तक संरचनाओं को बनाते हुए पानी को संग्रहीत करना होगा साथ ही पानी की बचत करने वाली तकनीकों को भी अपनाना होगा। मैं इस पत्रिका के माध्यम से जल संरक्षण के कुछ महत्वपूर्ण परम्परागत तरीके साझा कर रहा हूँ।

कंदूर (खेती निर्माण): पहाड़ी या अधिक ढलान वाले क्षेत्रों में कंदूर ट्रेंच, सतत कंदूर ट्रेंच, अर्धचन्द्राकार ट्रेंच, बोल्टर चेक बनाकर पानी को संरक्षित किया जा सकता है।

चेकडेम/एनिकट : छोटे जल स्रोतों जैसे नाले पर चेकडेम, एनिकट, गेबियन चेकडेम आदि बनाकर बहते हुए पानी को रोकते हुए संग्रहीत किया जा सकता है। बड़े जलस्रोत जैसे नदी आदि पर बांध बनाकर जल को संग्रहीत किया जा सकता है।

जल को संग्रहीत करने के साथ-साथ जल का समुचित उपयोग करते हुए बचत भी जरूरी है इसके लिए निम्नलिखित विधियाँ किसान भाई अपना सकते हैं।



सतत कंदूर ट्रेंच



अर्धचन्द्राकार ट्रेंच

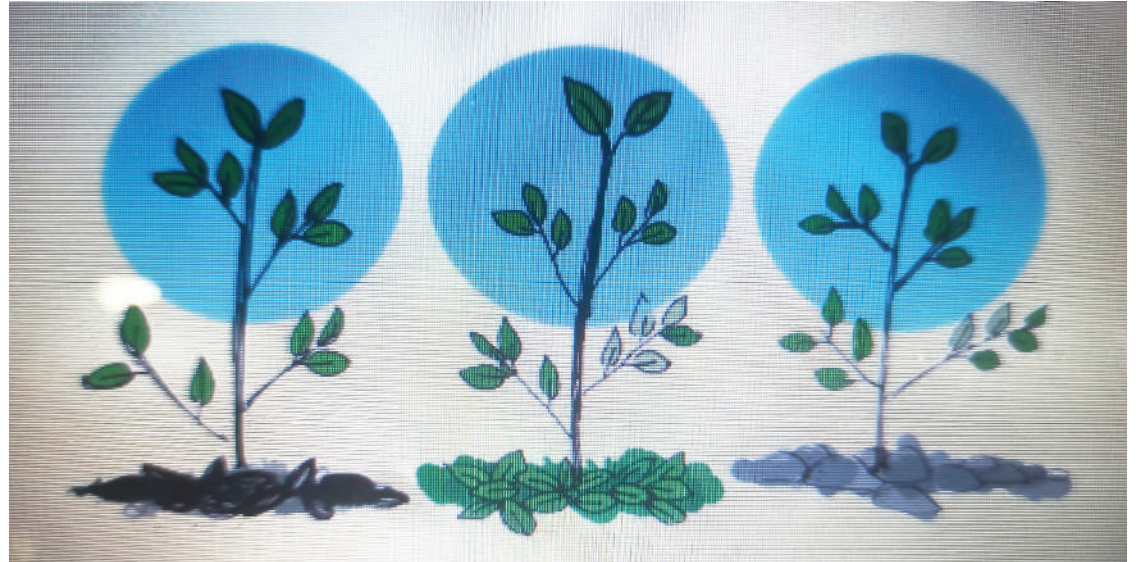


गेबियन चेकडेम



खेत ट्रेंच

मल्लिचंग: पौधे के आसपास या फसल में पत्थर, पेड़ पौधों की पत्तियों, पोलीथिन आदि से मल्लिचंग कर दी जाती है तो मिट्टी में नमी को बनाये रखा जा सकता है जिससे वहाँ मिट्टी के बहाव को भी रोका जा सकता है।



पत्तियों एवं पत्थर से मल्लिचंग

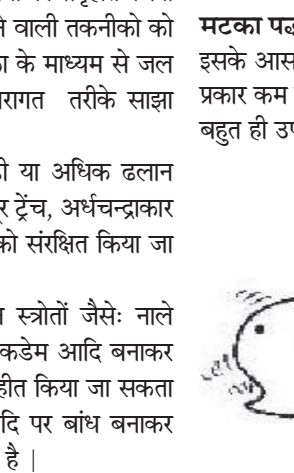
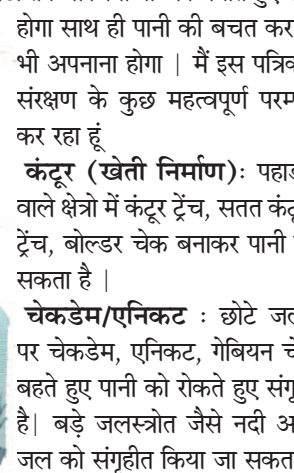
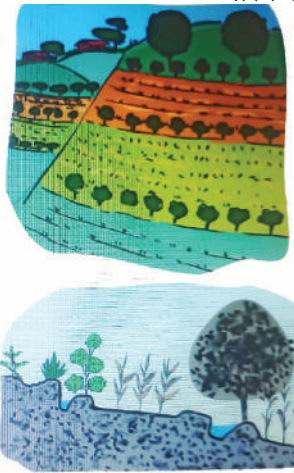
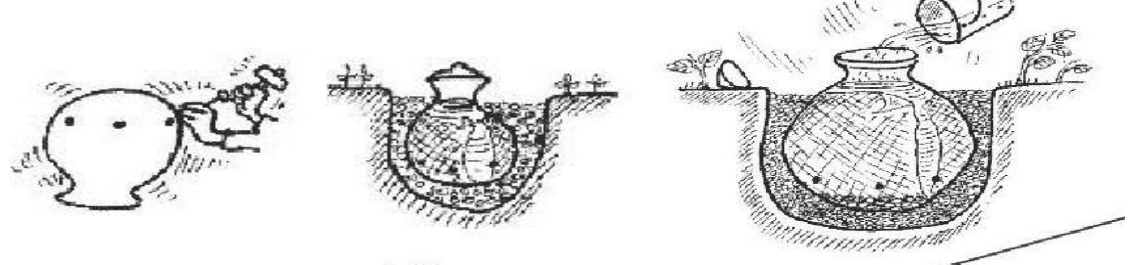
टपक सिंचाई : प्रायः देखने में आता है कि किसान भाई बहाव पद्धति का उपयोग कर सिंचाई करते हैं इससे बड़ी मात्रा में पानी व्यर्थ होता है. इसके स्थान पर यदि किसान भाई बहाव पद्धति की तुलना में टपक पद्धति से सिंचाई कर क्रमशः 10 गुना तथा फव्वारा पद्धति अपनाकर 6 गुना पानी बचा सकते हैं।



टपक सिंचाई

मटका पद्धति से सिंचाई : पुराने मटकों में छोटे-छोटे छेदकर उसे गड्ढाकर गाढ़ दिया जाता है और उसमें पानी भर दिया जाता है तथा इसके आसपास सब्जियां, फलदार पौधे, पेड़ आदि लगाये जा सकते हैं एक तिहाई पानी रहने पर पुनः पानी से भर दिया जाता है इस प्रकार कम पानी में भी सिंचाई की जा सकती है यह पद्धति गर्मियों के मौसम में पोषण वाटिका और फलदार पौधों को जीवित रखने में बहुत ही उपयोगी होती है।

मटका पद्धति से सिंचाई



डायरिया – लक्षण व बचाव के लिए घरेलु उपचार

आप सभी जानते है गर्मी का मौसम शुरू हो गया और इस समय हमारे क्षेत्र में तेज धूप ,गर्म हवा (लू) और उमस भरे दिन शुरू हो जाते है , जिससे हमें शारीरिक कमजोरी ,शरीर में पानी कि कमी व डायरिया जैसी कई परेशानियाँ हो सकती है । इसलिए हम सभी को समय रहते सावधानियाँ बरतना शुरू कर देना चाहिए । इस माह के अंक में हम डायरिया के विषय में जानेंगे ।

डायरिया क्या है ? -

डायरिया को अतिसार और आम बोलचाल की भाषा में दस्त भी कहते हैं। यह पाचन तंत्र (पेट) से संबंधित एक खराबी (विकार) यानी डिसऑर्डर है जिसमें बच्चो /मरीज को पतला मल होता है। मुख्य रूप से यह समस्या वायरल, बैक्टीरियल और पैरासिटिक इंफेक्शन के कारण होती है।साधारण भाषा में अगर कहे तो, दूषित खान-पान से हम डायरिया (दस्त) की समस्या से ग्रस्त हो जाते हैं । खास प्रकार की दवाओं के सेवन, हार्मोनल विकार या आंतों में सूजन के कारण भी बच्चे व बड़े डायरिया के शिकार हो जाते है । बच्चों में यह आम बीमारी है, लेकिन कई बार बहुत ज्यादा दस्त होने से शरीर में पानी की बहुत ज्यादा कमी हो जाती है, जो बच्चो को बहुत ज्यादा कमजोर बना देता है, यह कुपोषित बच्चो के लिए ज्यादा खतरनाक साबित होता है, समय पर ध्यान नहीं देने पर बच्चे की मृत्यु भी हो सकती है ।गर्मी व बारिश के दिनों में डायरिया की शिकायत बच्चो और बड़ो में काफी हद तक बढ़ जाती है, इसलिए हम सभी को इस दौरान बहुत सावधानी बरतनी चाहिए ।

डायरिया के लक्षण, इससे हम बचाव कैसे करे व इसके लिए कुछ घरेलु उपचार :-

बच्चो में डायरिया के कुछ सामान्य लक्षण— जिनसे हम आसानी से डायरिया की पहचान कर सकते है, जैसे -

- पानी जैसा दस्त होना व बार-बार दस्त लगना ।
- बुखार।
- मल त्याग।
- वजन घटना ।
- शरीर में पानी की कमी ।
- पेट में दर्द।
- जी घबराना ।
- उल्टी।
- बार-बार प्यास लगना।

डायरिया से बच्चो को बचाने के लिए हम सभी ये सावधानियाँ बरते, जो बच्चो को स्वस्थ रखेंगी -

- दूध को गर्म करके उपयोग में ले व दूध पिने की बोतल को साफ रखे ।
- पीने और खाना पकाने के लिए साफ व स्वस्थ पानी का प्रयोग करें।
- उबले हुए पानी का सेवन करें।
- बर्तनों को धोकर ही इस्तेमाल करें।
- अच्छी तरह पका हुआ, गर्म खाना खाएं व कच्चे भोजन के सेवन से बचें।
- बाजार या बहार की खाने पिने वाली वस्तु से बचाना चाहिए ।
- बार-बार हाथ धोएं।
- साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें।



- ताजा खाना ही खाएं, बासी खाने से परहेज करें।



आप और हम सभी हमारे खान-पान और साफ-सफाई पर ध्यान देकर वायरस या बैक्टीरिया से होने वाले डायरिया को आसानी से रोक सकते है।

डायरिया (दस्त) के दौरान बच्चो की देखभाल-



बार-बार दस्त होने के कारण बच्चो के शरीर में पानी की कमी हो जाती है इसलिए बच्चो को अधिक मात्रा में तरल पदार्थ देना चाहिए , जैसे- दूध पिते बच्चो को बार-बार स्तनपान, ओ.आर.एस. का घोल ,केरी का पन्ना, उबली हुई दाल का पानी, उबले हुवे चावल का पानी ,निम्बू का शर्बत ,नारियल पानी ,घर में बना नर्म व पतला खाना आदि । साथ ही बच्चो को समय-समय पर स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर इलाज करवाना चाहिए।

डायरिया के लिए घरेलु उपचार -

बच्चों में डायरिया होने से बहुत जल्दी शरीर में पानी की कमी होने लगती है इसलिए शरीर में पानी की कमी से बचने के लिए ओ. आर. एस. का घोल पिलाये, ओ.आर.एस. का पैकेट आसानी से गाँव में आंगनवाड़ी केंद्र व आशा दीदी के पास से मुफ्त में मिल जाता है ।लेकिन, अगर घर में किसी को अचानक डायरिया हो जाए, तो तुरंत इलाज के लिए घर में बना ओ.आर.एस.भी लाभकारी होता है, इसके सेवन से सिर्फ कमजोरी दूर होगी, बल्कि डायरिया का अस्पर भी कम हो सकता है।

घर पर ओ.आर.एस.घोल बनाने का तरीका -

ओ.आर.एस.घोल बनाने के लिए आवश्यक सामग्री -

- छह (6)छोटे चम्मच शक्कर (चीनी) ।
- एक (1)छोटा चम्मच नमक।
- एक (1) लीटर उबला हुआ पिये का पानी।

घर पर ओ.आर.एस.घोल बनाने कि विधि -



- अपने हाथ साबुन से धोएं ।
- एक लीटर पिने के पानी को उबालकर ठंडा कर ले, अब इसमें 6 छोटे चम्मच शक्कर (चीनी) पूरी तरह से घूल जाने तक मिलाये ।
- अब इसमें 1 छोटा चम्मच नमक मिलाये , घर पर बना ओ.आर. एस घोल सेवन के लिए तैयार है
- इस तैयार घोल को ढक कर रखे ।
- थोड़ी-थोड़ी देर में यह घोल बच्चे को पिलाते रहें ।
- यह घोल 24 घंटे में खत्म कर दे, यदि बच जाये तो फेंक देवे और दुबारा बनाये ।

केरी (कच्चे आम) पन्ना -

तेज गर्मी के दौरान एक आदर्श पेय माना जाता है, ये डिहाइड्रेशन और डायरिया से बचाता है । केरी (कच्चे आम) पन्ना ऊर्जा भी प्रदान करता है, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता या जीवाणु प्रतिरोध को बढ़ाता है।

केरी (कच्चे आम) पन्ना



**** इन सबके अलावा, डायरिया के लक्षण दिखाई देने पर हम तुरंत डॉक्टर से परामर्श कर उचित इलाज कराएं और दी गयी जानकारी का पालन करे एवं डॉक्टर के बताये अनुसार नियमित दवाईयाँ लेवे ।**

शिक्षा और विकास स्वराज : हमारे सभी बच्चे विशेषकर बालिकाओं का विद्यालय से जुड़ाव

सांस्कृतिक मूल्यों के प्रणेता, प्रकृति के साथ सामंजस्य, तालमेल, और आनंद की अनुभूति के साथ जीवन-यापन कर रहे आदिवासी समुदाय के पुरुषों और पूर्वजों को औपचारिक शिक्षा प्राप्त की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई थी । परिणाम स्वरूप वर्तमान में भारतीय बच्चों की आबादी का एक बड़े हिस्से के रूप में ऐसे बच्चे हैं जो औपचारिक शिक्षा से जुड़ने वाली पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी के रूप में हैं और देश के तीन आदिवासी राज्यों राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के जनजातिय बाहुल्य जिलों में भी इस तरह की आबादी का बड़ा हिस्सा है ।

आदिवासी सन्दर्भ में वर्तमान परिदृश्य:

आर देखा जाए तो आदिवासी अंचल में खाद्य असुरक्षा के चलते बड़ी संख्या में पलायन कर यहाँ के निवासी अन्य जगहों पर जाते हैं । यह पलायन 2 तरह से होता पहला तो ऐसे जिसमें समुदाय में परिवार का मुखिया अकेले ही पलायन करता है, और कुछ समय बाद लौटकर अपने गाँव अपने घर परिवार के पास आ जाता है ।इस प्रकार के पलायन से परिवार को स्थायित्व तो मिला रहता है लेकिन परिवार और बच्चों की देख-रेख में परिवार के मुखिया का पूरा योगदान नहीं हो पाता।जिसके चलते परिवार में बच्चे की शिक्षा, पोषण आदि से जुड़े मसलों पर विपरीत असर देखा जा सकता है ।दूसरी तरह के पलायन में पूरा परिवार मुखिया के साथ अर्थात बच्चे और महिलाएं भी समुदाय और गाँव से बाहर चले जाते हैं जिसके विपरीत प्रभाव के चलते बच्चे शिक्षा से छूट जाते हैं । ऐसे में बालिकायें शिक्षा से वंचित होकर घर के कामों में सहयोग करने लगती हैं और अपने छोटे भाई-बहिनो को पालने में सहयोग करने लगती हैं । परिवार के बालक कम उम्र से ही बालश्रम जैसी भयावह स्थितियों से जुड़कर शिक्षा से वंचित हो जाते हैं। विद्यालयों के नामांकन पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है । एक ऐसा वर्ग भी है जो जैसे-तैसे करके भी विद्यालयों से अपने



बच्चों को जोड़कर रखने में सफलता हासिल कर लेता है लेकिन विद्यालयों में ठहराव को लेकर चिंतनीय स्थितियाँ देखी जा सकती हैं ऐसे में विद्यालय स्तर पर शिक्षकों की जिम्मेदारी बनती है कि शिक्षक बच्चों के सर्वांगीण विकास के क्रम में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति

सोचे समझे तरीके से कार्य की योजनायें बनाना और योजनानुरूप तैयारी करने के कार्यों में अपना समय और ऊर्जा अधिक दे सके साथ ही विषय की प्रकृति के अनुरूप बच्चों के साथ शिक्षण कार्य तय करे और उसी अनुसार कार्य निष्पादित भी किये जाएँ

सामंजस्यपूर्ण एकीकरण की

भूमिका:

साथ ही यह भी सोचकर आगे बढ़ने की आवश्यकता होती है कि विद्यालय समुदाय का हिस्सा होती हैं अतः अलग-थलग रहकर विद्यालय विकास की सोचने के बजाय समुदाय के लोगों के साथ मिलकर विद्यालय विकास योजनाओं का निर्माण किया जाए ताकि बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप सर्वांगीण विकास में उनको सहयोग मिल सकेगा और समाज में रहकर जीने वाले बच्चे उस समुदाय के अच्छे भावी नागरिक के रूप में तैयार हो सकेंगे इस तरह के परिणाम निश्चित ही बेहतर होते हैं

सरकार द्वारा भी यह सोचे जाने की आवश्यकता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित किये जाने के क्रम में सभी विद्यालयों की ढांचागत स्थितियों को शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया जा सके

इस अनुरूप बनाये जैसे-प्रायोगिक लैब, खेलने का मैदान, पुस्तकालय की उपलब्धता और काम में लिए जाने की स्वतन्त्रता, पीने के पानी की व्यवस्था, बैठने के लिए पर्याप्त संख्या में कक्षा-कक्ष आदि इन सबमें भी अति-महत्वपूर्ण है बच्चों और शिक्षकों का

समानुपात में होना और सभी विषयों से सम्बन्धित शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना इससे बच्चों को अपनी रूचि के अनुसार विषयों का चयन कर शिक्षा को जारी रखने में सहयोग मिल सकेगा भौतिक स्वरूप से परे सीखने-सिखाने की गतिविधियाँ, शिक्षक के साथ बच्चों के मजबूत और बेहतर रिश्ते, पढ़ने और पढ़ाने के साधन और सामग्री आदि ऐसी व्यवस्थाएं हैं जो कि



शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के आधार के रूप में कार्य करने वाले हैं और बच्चों को विद्यालयों से जोड़े रखने में कारगर साबित हो सकते हैं इसके साथ ही सभी बच्चों की शिक्षा से जुड़ाव सुनिश्चित करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिक्षा से सरोकार रखने वाले विभिन्न एजेंट जैसे- शिक्षक, विद्यालय, समुदाय, माता-पिता आदि के बीच में एक बेहतर सामंजस्य स्थापित होना आवश्यक है

बालिका शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न भूमिकाओं को इस प्रकार से देखते हैं :-

विभिन्न हितधारकों की भूमिका	बच्चों की शिक्षा विशेषकर बालिका शिक्ष के लिए ध्यान दिए जाने वाले बिंदु
परिवार की भूमिका :-	- बच्चों के साथ सहजता के साथ व्यवहार करें । - दबाव और तनाव के कारण बच्चे ठीक से खा और पी नहीं पाते हैं परिवार और माता -पिता की इसके लिए भूमिका बनती है कि बच्चों के खाने पीने का पूरा ध्यान रखें । - बच्चे ठीक से नियमित और 8-10 घंटे की नींद लें । क्योंकि नींद लेना शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक स्तर के लिए बहुत जरूरी है । - बच्चों को भावनात्मक स्तर पर विशेष सहयोग की जरूरत होती है बच्चों को ये अहसास करवाते रहें कि वे आपके के लिए सर्वोपरि हैं । - बच्चे नियमित रूप से पढ़ने लिखने की प्रक्रियाओं से जुड़े और इसे संभव करने के लिए बच्चों का दैनिक स्तर पर रूटीन को सुनिश्चित करने में सहयोग करें अगर बच्चे नहीं कर पा रहे हैं तो नियमित और सतत स्तर पर उनके साथ बातचीत करें उन्हें इसके फायदे और नुकसान दिखाने में मदद करें । - विद्यालय स्तर पर नियमित रूप से शिक्षकों के साथ मिलकर बच्चे के बारे में बातचीत करते रहें । - बच्चों के साथ आत्मीय रिश्ते बनायें ताकि बच्चों को अगर किसी विषय आधारित समस्या या सीखने सम्बन्धित कोई समस्या का सामना करना पड़ रहा है तो बच्चा खुलकर अपनी समस्या को आपके साथ साझा कर सके । इस समस्या को विद्यालय स्तर पर शिक्षक के साथ बातचीत करते हुए समस्या का निस्तारण किया जा सके । - अगर बच्चे में कुछ व्यवहारात्मक बदलाव देखाते हैं तो उसे समझने का प्रयास करें । - बच्चों को डांटने, फटकारने या पिटाई की बजाय उसमें आ रहे बदलाव की वजह को समझें और इन कारणों को लेकर काम करें ताकि बच्चों को जरूरी मदद मिल सके । - पढाई के प्रति बच्चों का मनोबल बढ़ाएं और अपनी समस्याओं को बोलकर अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करें । - बच्चे जिस तरह से भी सहयोग की अपेक्षा परिवार से चाहते हैं उस जरूरत को समझें और उसे पूरा करने में बच्चे की मदद करें ।
समुदाय की भूमिका :-	- बच्चों के साथ सहयोगात्मक रवैये को अपनाएँ प्रत्येक परिवार के बच्चे को अपना समझकर सकारात्मक व्यवहार करें । - विद्यालय स्तर पर निगरानी रखें कि बच्चों के साथ विद्यालय स्तर पर किसी प्रकार का दबाव नहीं बनाया जा रहा है । - शिक्षकों के साथ नियमित संवाद स्थापित करें और किसी भी तरह की शैक्षणिक समस्या को लेकर विद्यालयों को सहयोग करें ।
सरकार की भूमिका :-	- विद्यालय स्तर पर शैक्षणिक गतिविधियों को गतिविधि आधारित शिक्षण बनाते हुए बच्चों का सीखना सुनिश्चित करें । - विद्यालयों में विषयाधारित शिक्षकों का होना सुनिश्चित किया जाए । - शिक्षकों को शैक्षणिक गतिविधियों के अलावा अन्य कामों से अलग रखें । - शिक्षकों को विषयाधारित शिक्षण करने में अगर किसी तरह की समस्या आ रही है तो पर्याप्त सहयोग मिल सके । - पाठ्यक्रम आधारित मूल्यांकन में विविधता को सुनिश्चित किया जाए । - बच्चों की सीखने की गति का विशेष ध्यान रखा जाए ।



